जंगल का राजा शेर ही क्यों...

मुझे कहानी की किताबें अच्छी लगती हैं, कवितायें भी अच्छी लगती हैं। तीन पतंगों की कहानी, जंगल के शेर की कहानी। कहानियों का संसार मजेदार होता है और बुआ कहती हैं कि अगर तुम खूब कहानियां पढ़ोगे और स्कूल का काम समय पर करोगे तो सब कुछ जल्दी सीख जाओगे।

– आलोक सिंह

फोटो– पुरुषोत्तम

बच्चा कहता है, मुझे स्कूल की एक किताब पसंद है। अभी तो उस किताब का नाम नहीं पता लेकिन उस किताब में एक चित्र है जिसमें दो बच्चे बारिश में खेल रहे है। मैंने पूछा, आपको यह किताब क्यों पसंद है? बच्चा बोला, दूसरे बच्चों की तरह मुझे भी बारिश में खेलना बहुत अच्छा लगता है, लेकिन मम्मी मुझे खेलने ही नहीं देतीं। मैंने पूछा, आपने अपनी मम्मी से यह नहीं पूछा कि वह क्यों आपको बारिश में खेलने से मना करती है? बच्चे ने इधर–उधर देखते हुए, हंसते हुए कहा, पूछा था लेकिन मम्मी मारने लगीं। (बच्चा यहां कुछ समय के लिए रुकता है और तेज आवाज में बोलता है कि मुझे न और भी किताब अच्छी लगती है) दूसरी किताब के बारे में बताते हुए बच्चा बोलता है, "तीन पतंगों की कहानी" बच्चा पतंगों के बारे, उनके रंग के बारे में बात करता है। पतंग कितनी ऊपर उड़ती है उसके बारे में, इस तरह की कुछ सूचनाओं के साथ मेरे साथ संवाद करता है।

संवाद में आगे वह एक कहानी का नाम लेता है जिसका शीर्षक है "जंगल का शेर"। इस कहानी में बच्चा पात्रों के नाम से कहानी के बारे में बताता है। वह कहता है, एक शेर होता है वह कई दिनों से सोया नहीं होता है। तभी एक मक्खी आती है, वह शेर को परेशान करने लगती है और उसे सोने नहीं देती क्योंकि उसे जंगल राजा बनना होता है। मैंने पूछा, जंगल का राजा तो शेर होता है, जो बहुत खूंखार होता है तो ऐसे में मक्खी जंगल का राजा कैसे बन सकती है? बच्चा बोला, मक्खी जंगल का राजा नहीं बन सकती। राजा तो शेर ही बनेगा। वह सबसे ताकतवर होता है, वही किसी को भी मारकर खा सकता है। मैंने पूछा, मक्खी सबसे छोटी जानवर है क्या इसलिए वह नहीं बन सकती? बच्चा बोला, मैंने तो सर यही पढ़ा है कि जंगल का राजा शेर होता है और यह बात तो मेरी बुआ भी बताती हैं, जब वह कहानी सुनाती हैं तो कहती हैं कि जंगल का राजा तो शेर ही होता है।

आगे बच्चा एक कविता सुनाता है "मन करता है सूरज बनकर...."। इस कविता को बच्चे ने पूरा सुना दिया. आगे बच्चे बताता है कि वह अपने छोटे भाई को भी पढ़ाता है जो कि कक्षा 1 में है। उसने रिमझिम किताब का नाम लिया। उसमें दी गई एक कविता "रेलगाड़ी" के बारे में बताया। इस कविता में छोटे से बड़े बच्चे एक सीधी लाइन में खड़े होकर रेलगाड़ी बनते हैं और खूब तेज दौड़ते हैं, मजे करते हैं"।

इस तरह से बच्चे ने संवाद करते हुए 3 कहानी और एक कविता सुनाई। आगे मैंने पूछा कि आपको यह कहानियां, कवितायें क्यों पसंद हैं? बच्चा बोला, कहानी पढ़ना और

सुनना अच्छा लगता है इसलिए मैं कहानियां पढ़ता हूं और घर पर अपनी बुआ से कहानियां सुनता हूं। मुझे यह भी पता है कि अगर मैं सही से कहानी पढ़ूंगा और समय से अपना काम पूरा करूंगा तो मुझे नौकरी मिलेगी। मुझे पुलिस में जाना है। यह बात सुनकर मुझे थोड़ी हैरानी हुई। मैंने पूछा, यह किसने बताया? बच्चा बोला मेरी बुआ कहती हैं कि ढेरों कहानियां पढ़ने से समय से स्कूल का काम करने से आप जल्दी से नौकरी पा जाओगे।

यह बच्चा कक्षा तीन में पढ़ता है। कहानी पढ़ना और सुनना इसकी रुचि है।

पूरे संवाद से मुझे यह पता चलता है कि बच्चे को मौखिक भाषा में अपनी बात रखने का, बातचीत करने का पिछली कक्षा में भरपूर अवसर मिला है। भाषा सीखने के एक उद्देश्य से यह बात तो ठीक लग रही है। दूसरे उद्देश्य से देखें तो मुझे यह बात समझ में नहीं आ रही कि बच्चे को कल्पना करने का मौका देना क्या हम यह बात समझ पाते हैं जैसे–जंगल का राजा तो शेर ही होता है, यह बात हमने भी पढ़ी और अभी की कक्षा में यह बात उसी तरह से स्थापित है जैसे कि हमने कहानियों में सुना था।

इसी कड़ी में यह भी बात समझनी है कि बच्चों को सीखने में एक सुगमकर्ता की जो भूमिका होती है (घर के सदस्य, दोस्त, पड़ोसी) उसे समझना। बच्चा अपनी बुआ से सुनता है कि जंगल का राजा तो शेर ही होता है और इस सूचना को आधार देने के लिए यह प्रमाण कि वह बहुत ताकतवर होता है, खूंखार भी होता है, जिसे चाहे वह मारकर खा सकता है। इस बच्चे की जगह अगर मैं खुद होता तो शायद इतनी ही मजबूती से यह बात समझता कि जंगल का राजा तो शेर ही होता है।

मतलब हम बच्चों को कल्पना करना सिखाना चाहते हैं मगर एक तरफ हम उन पर कुछ सूचनायें, तथ्य, जानकारी जबरन थोपते हैं।

दूसरी बात यह कि अच्छी नौकरी पाने के लिए ढेरों कहानियां पढ़ना, समय से स्कूल का काम करना, बच्चों के लिए इस तरह की सोच उनके समूचे विकास के लिए कितनी प्रासंगिक है मुझे पता नहीं। थोड़ा और आगे सोचें तो संवैधानिक मूल्यों के बड़े उद्देश्य से यह बात कैसे जुड़ती है? (भाषा सीखने का संबध नौकरी पाना या अच्छा नागरिक बनना) यह बात एक फ्रेम में नहीं समझ में आती। अगर बच्चे की बुआ का सन्दर्भ देखें तो कुछ हद तक उनकी बात ठीक है (नौकरी पाना उनकी प्राथमिकता है) लेकिन वह (या उन जैसे लोग) यह कब समझना शुरू करेंगे कि शिक्षा का यही एक मात्र उद्देश्य नहीं है कि नौकरी मिल जाये। यह बात पहले आज के बड़े समझेंगे तभी यह बात स्कूलों तक, उनके बच्चों तक पहुंचेगी।

कुल मिलकर इस संवाद से यह समझ में आता है कि भाषा सीखने की पूरी प्रकिया को समझना, इनके उद्देश्यों को समझना इस पूरे सन्दर्भ की एक झलक दिखाई देती है। साथ में यह भी समझ में आता है कि बच्चे की शिक्षा में उनके शिक्षक, अभिभावक किस तरह से अपना योगदान देते हैं।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, उधमसिंह नगर, उत्तराखड से जुड़े हैं।)

शिक्षक सृजन

बिल्ली रानी

बिल्ली रानी आती रोज,
करती है चूहों की खोज
गुड़िया बोली बिल्ली मौसी,
तुम तो दिखती शेरनी जैसी
म्याऊँ-म्याऊँ कर आती हो,
दूध मलाई खा जाती हो
खूब सताती दिखाती पोज,
बिल्ली रानी आती रोज
मेरे घर दावत में आना,
दौड़-दौड़ कर चूहे खाना
गुड़िया घर मिल गया भोज,
बिल्ली रानी आती रोज
मुझको तुम कुछ न कहना,
तेरे संग है मुझको रहना
दोनों मिलकर करें मौज,
बिल्ली रानी आती रोज ।

– सुशीला साहू

(शासकीय प्राथमिक शाला कोसमनारा, धनागर, रायगढ़, छत्तीसगढ़)